

चन्द्रधर शर्मा गुनेरी की कहानियों में प्रेम का स्वरूप



Date 29/03/20

Page 120

चतुर्थ सत्र

प्रेम की सबसे बड़ी महत्ता यह है कि प्रेम मनुष्य होने का अकारुण्य प्रमाण है। प्रेम के बिना जीवन या संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। भक्त कबीर की ये पंक्ति शायद प्रेम की इसी महत्ता को गहराई से स्थापित करती है -

‘जोहिं घट प्रेम न सँचरै, सो बर जाय मसान।’

जिस शरीर में प्रेम का संचार नहीं है, वह शरीर मृत है। अर्थात् प्रेम हमारे शरीर में जीवन का संचार करता है। प्रेम एक साध्य है, जिसके कई साधन हो सकते हैं। चाहे माँ और पुत्र का प्रेम, भाई-बहन का प्रेम, युवक-युवती का प्रेम तथा अन्य पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों का प्रेम। प्रेम की कोई सर्वमान्य या व्याख्यायित परिभाषा नहीं होती, हर व्यक्ति का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण भिन्न होता है। प्रेम की स्थिति भी कुछ वैसी ही है जैसे - ‘हरि अनंत हरि कथा अनंत।’ हजारों वर्षों से हिन्दी साहित्य इस प्रेम का बरवान करता आया है परंतु आज भी प्रेम कहानियों, कविताओं की पढ़ने समय हम उसी नवीनता का अनुभव करते हैं, जिसका अनुभव हम सैकड़ों साल पहले किया करते थे। जाहिर है प्रेम कभी अग्रासंगिक नहीं होता अपितु उसका स्वरूप परिवर्तन होता रहा है।

गुनेरी जी की कहानियों की बात करें तो गुनेरी जी ने अपने जीवन में सर्वमान्य तीन कहानियों ही लिखी और इन्हीं तीन कहानियों से हिन्दी साहित्य में स्थापित कहानीकार हो गये। गुनेरी जी की कहानियों का प्रमुख प्रतिपाद्य प्रेम ही है, जिसके इर्द-गिर्द कई तरह की कथाएँ बुनी गई हैं। गुनेरी जी ने अपनी प्रेम कहानियों को द्विवेदीयुगीन नैतिकताओं का अतिक्रमण कर स्थापित किया है। जहाँ एक ओर प्रेम को साहित्य में वर्णित माना जाता है वहीं सहज और उदात्त प्रेम संबंधों को कहानियों में स्थापित कर इन्होंने तहलका मचा दिया।

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA



गुनेरी जी के इस उन्मुक्त प्रेम पर तत्कालीन भारतीय नवजागरण का भरपूर प्रभाव था, जिसका उदाहरण 'सुखमय जीवन' में देखा जा सकता है। यहाँ तक कि उन्होंने पात्रों के माध्यम से अपने को ब्रह्मसमाजी कहलवाया है। कहानी के पात्र बाबू गुलाब राय वर्मा कहते हैं कि "मैं ब्रह्मसमाजी हूँ। मेरे यहाँ परदा नहीं है।" इस तरह पश्चिमी शिक्षा के संपर्क में आने से उन्होंने तत्कालीन नारी जीवन में बदलते हुए विभिन्न पहलुओं को देखा था। फलतः उनकी कहानियों में प्रेम के साथ सुधारवादी युग की मौकता नजर आता है।

गुनेरी जी ने अपनी दो कहानियों में जिस किशोर वय और ~~उच्चैःस्वल~~ प्रेम को दिखाया है उसे देखकर यह आश्चर्य होगा कि क्या 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का कौटा' लिखने वाला व्यक्ति ही 'उसने कहा था' जैसी उदात्त प्रेम संबंधों की कहानी लिख सकता है? यह उनके प्रेम संबंधों, विचारों की छलांग है। उनकी जगह यदि प्रेमचन्द होते तो शायद विचारों की छलांग अपनी कहानी के अनुभवों से गुजरते हुए लगाने। एक ही फलक पर दो प्रेम रूपों को पाठकों के समक्ष रखकर गुनेरी जी सोचने को विवश कर देते हैं। उनकी कहानी में परिपक्वता कला के साथ-साथ बस्तु, सर्वदना और जीवन-दृष्टि के स्तर पर भी आती है। गुनेरी जी की कहानी में प्रेम का मौसल और शरीरी रूप उभरना अवश्य है किन्तु वह उच्चैःस्वल नहीं बल्कि पूर्णतः संयमित होता है। उनकी कहानियों में प्रेम हरी-पुरुष के आपसी जानिब्य से धीरे-धीरे प्रगाढ़ता की ओर बढ़ता है। प्रथम दो कहानी का प्रेम विवाह में परिणत होता इसी प्रकार के प्रेम का उदाहरण है। गुनेरी जी हमेशा मर्यादित और समाज अनुकूल प्रेम की कल्पना करते हैं जिसमें छानि, धर्म एवं समाज की कोई बाधा नहीं है।

उनकी प्रथम कहानी 'सुखमय जीवन' की बात करें तो इस कहानी का प्रेम प्रथम दर्शन से उत्पन्न प्रेम है जिसमें सहचर्य नहीं है। नायक, नायिका को देखता है तो डगा सा रह जाता है। कहानी का नायक जगदेवशरण वर्मा जब



नायिका कमला को देखता है तो उसका रूप-सौंदर्य उसे मोहित कर लेता है - "पारसी-चाल की एक गुलाबी साडी के नीचे चिकने काले बालों से घिरा हुआ उसका मुखमण्डल दमकता था और उसकी आँखें मेरी ओर कुछ दया, कुछ हँसी और कुछ विस्मय से देख रही थी। बस पाठक! ऐसी आँखें मैंने कभी नहीं देखी थी। मानो वे मेरे कलेजे को धौलकर पी गई।" नायक का नायिका के प्रति यह आकर्षण मध्यकालीन प्रेम की याद ताजा कर देता है। सहला ह्यान सूर की उन पंक्तियों पर चला जाता है -

"औँचक ही देखी तहँ राधा,
नैन बिहाव भाल दियो रोरी।
सूर ह्याम देखत ही रीमें,
नैन-नैन मिलि परी ठगोरी।"

यह 'नैन-नैन मिलि परी ठगोरी' यही आकस्मात् उपजा प्रेम है जो लेखक जयदेवशरण वर्मा के मन में हुआ है।

इस कहानी में मनोविज्ञान कई स्तरों में उभरता है। स्त्री और पुरुष दोनों मनोविज्ञानों की गुल्लकी जी ने काफी सुंदर ढंग से कहानी में रखा है। जयदेवशरण वर्मा के माध्यम से लेखक ने कहानी में दोहरे चरित्र को दिखाया है। एक तरफ तो नायक सिद्धांत बघारने में इतना माहिर है कि गृहस्थ जीवन पर एक पुस्तक 'सुखमय जीवन' भी लिख चुका है परंतु व्यावहारिकता में उस पुस्तक के तमाम सिद्धांत किताबों में ही धरे रह जाते हैं। गुल्लकी जी ने यहाँ प्रेम के सिद्धांत की अपेक्षा भावों की गीतता को ज्यादा रेखांकित किया है। जयदेवशरण वर्मा ने अपना आत्म विश्लेषण करते हुए लिखा है "दो ही पहर में, मैं बालक से युवा हो गया था। अंगरेजी महाकाव्यों में, जहाँ-जहाँ प्रेमिका-प्रेमी का वार्त्तालाप पढ़ा था, वहाँ-वहाँ का दृश्य स्मरण करके वहाँ-वहाँ के वाक्यों को धारित रहा था, पर यह निश्चय नहीं कर सका कि थोड़े परिचय पर भी बात कैसे करनी चाहिए। अंत को अंगरेजी पढ़ने वाले की दृष्टि ने आर्यकुमार की शालीनता पर विषय पाई और चपलता कहिए, पाणलपन कहिए, मैंने दोड़कर कमला का



हाथ पकड़ लिया।”

यहाँ गुनेरी जी ने तमाम नैतिकता और आदर्शवाद का सजाक उड़ाया है तथा एक युवक के मन के प्रेम संबंधी भाव को सहज तरीके से रेखांकित किया है। 'सुखमय जीवन' लिखने वाला लेखक खुद अपने आप पर संयम नहीं रख पाता है और रजनीगंधा की कार्रियों के बीच भावावेश में कमला का हाथ पकड़कर कहता है - "प्यारी कमला, तुम मुझे प्राणों से बढ़कर हो, प्यारी कमला, मुझे अपना भ्रमर बनने दो। मेरा जीवन तुम्हारे बिना मरुस्थल है, उसमें मीठा किनी बनकर बहो। मेरे जलते हुए हृदय में अमृत की पट्टी बन जाओ। जब से तुम्हें देखा है, मेरा मन मेरे अधीन नहीं है। मैं तब तक शांति न पाऊँगा जब तक तुम -" इन पंक्तियों में संसार ब्राह्म के तमाम सिद्धिंत धरे रह जाते हैं और नायक भावनाओं के ज्वार में बह जाता है जो कि एक किशोरवय युवा का गुण है।

स्त्री-मनोविज्ञान का वर्णन करते हुए कहानी में गुनेरी जी ने यह दिखाया है कि प्रेम के क्षेत्र में पुरुष की अपेक्षा नारी अधिक सचेत, संयमित और पुरुष पारखी होती है। जयदेवशरण वर्मा कहता है - "पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक पहचान सकती हैं कि कौन अनुभव की बातें कर रहा है और कौन गप्पें हाँक रहा है।"

गुनेरी जी की दूसरी कहानी 'बुढ़ू का कौंटा' एक अल्ट्रा प्रेम को चित्रित करता है। इसमें प्रेम की उत्पत्ति प्रथम दर्शन से नहीं सहचर्य से होती है। इस कहानी में नायक सशक्त रूप में आई है, जो नायक पर हमेशा भारी पड़ती है। इस कहानी में नायक-नायिका का प्रेम तमाम किशोरवय अट्रोलिमो से गुजरता हुआ विवाह के बंधन तक पहुँचता है जिसमें संयोग का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कहानी में नायक का प्रवेश सशक्त रूप में होता है जिसका अंदाजा कुल्ले के पर हुए आपसी छींटकशी में देखा जा सकता है। इस कहानी में भी प्रेम का प्रथम आकर्षण आँखों के माध्यम से होता है। रघुनाथ जब भागवती को पनघट पर देखता है। लेखक ने लिखा है - "आँखों के उले काने, कीए लफेद

नदी, कुछ मटिया नीले और पिघलते हुए। यह जान पड़ता था कि उलने अभी पिघलकर बह जाएंगे। अगले दिन जब नदी किनारे रघुनाथ, भागवती की देखता है तो मन ही मन उसे नहीं देखने की प्रतिज्ञा करता है परंतु वह चूँकि उसके प्रेम-पाश में आबद्ध होगा जाता है इसलिए वह बार-बार भागवती की ओर देखता है। फिर दोनों का एक दूसरे पर कंकड़ मारना, भागवती द्वारा उसके सारे सामान को नदी में फेंक देना, रघुनाथ का भागवती को धुसा मारना, आदि के माध्यम से जो प्रेम का दृश्य सामने आता है वह किशोरा-वस्था के अर्धप्रतिष्ठित प्रेम को चित्रित करता है। इस कहानी में लेखक ने कौंटे को प्रेम के प्रतीक के रूप में अर्थवत्ता प्रदान की है। वह कौंटा जो भागवती के पैर में छँस जाता है और रघुनाथ उसे निकालकर अपने पास रख लेता है। यह कौंटा मछल कौंटा नहीं बल्कि उन दोनों के प्रेम की निशानी है। अपने प्रेम की परिणति से बेखबर जब दोनों संयोग से पति-पत्नी के रूप में मिलते हैं तो वही कौंटा दोनों हृदयों का मिलन-बिन्दु बन जाता है। वह कौंटा उन तमाम प्रेमानुभवों को जाग्रत कर देता है, जो विवाह पूर्व उनकी जिंदगी में घाटित हुए हैं। वह अन्ध लड़की जो कभी यह कहती थी कि इस बुढ़ के सामने कौन अपना लहंगा पसारेगी वही आज अपना सर्वस्व समर्पित कर चुकी थी। जो प्रेम विवाह पूर्व अन्धता से पूर्ण था, वहीं शादी के उपरान्त उसमें प्रौढ़ता के दर्शन होते हैं।

गुलेरी जी की सर्वाधिक प्रसिद्ध कहानी है 'उसने कहा था' यह एक ऐसी कहानी है जो अपने कथ्य और शिल्प की बुनावट में 'नई-कहानी' को भी मात देती है। इसमें प्रेम के एक आदर्श स्वरूप की कल्पना की गई है। जीवन की एक छोटी सी घटना पूरी कहानी को संचालित करती है। कहानी की शुरुआत अमृतसर के एक बंगले से होती है। लड़का, लड़की को 'तैरी कुड़माई हो गई' का कर चिढ़ाता है और लड़की 'घात' कहकर भाग जाती है।



एक दिन जब इसी क्रम में लड़के ने पूछा 'मेरी कुड़माई हो गई' इसपर उसने कहा - 'हाँ' हो गयी। 'कवर' कल देखते नहीं यह रेशम ने कहा हुआ सानू। इतना सुनते ही लड़के ने जो प्रतिक्रिया दिखाई उसका वर्णन गुलेरी जी ने सीधे शब्दों में कर दिया और उस घटना के पीछे छिपे भाव को पाठक पर विचारार्थ छोड़ दिया। यही कहानी की विशेषता है। आवश्यक यह नहीं है कि कहानी में क्या कहा गया है आवश्यक यह है कि कहानी कैसे कही गई है।

अमृतसर के इस दृश्य के बाद कहानी सीधे फ्रांस और बेल्जियम के मैदान में पहुँचती है और सारी कहानी प्रत्याभास शैली में चलती है। जिसका प्रयोग पहली बार गुलेरी जी ने किया। उस समय पाश्चात्य में भी इसका प्रयोग नगण्य था। 25 वर्षों बाद जब वह छुट्टी में घर लौटता है और पुर्बेदारनी से उसकी मुलाकात होती है तब पुर्बेदारनी अँधेला पसारकर अपने पति और बेटे के जीवन रक्षा की भीख माँगती है। उही लहना सिंह के मन में जिसके प्रति पच्चीस वर्ष पहले अफ़जाने में प्रेम का भाव उत्पन्न हुआ था। उसके पति और बेटे की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देता है। जिसके कारण यह प्रेम के सात्विक भाव के साथ-साथ आत्म-बलिदान की कहानी बन जाती है।

यह कहानी प्रेम के दृष्टिकोण से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि एक तरफ तो प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा है, चारों तरफ मानवता का नाश हो रहा है। ऐसी परिस्थिति के बीच प्रेम का जो उदात्त रूप सामने आता है वह पाठक को अभिभूत कर देता है। पूरी कहानी एक प्रेम के उच्चतम आदर्श को स्थापित करती है। प्रेम अतीन्द्रिय हो जाता है। शारीरिक इच्छा-वासना का लोभ नहीं है। नायक इसलिए अपना बलिदान दे देता है क्योंकि 'उसने कहा था'।

यहाँ कहानी में प्रेम मुखरित नहीं, सँकेतो द्वारा व्यक्त हुआ है। एक तरफ बाजार में लहना सिंह का समस्त क्रिया-व्यापार प्रेम को प्रदर्शित करता है, परंतु वह कुछ कहता नहीं है। ठीक उसी प्रकार जब वह मृत्यु के करीब होता है तो सिर्फ

Date / / Page 7

इतना कहता है - "सुबेदारनी होश को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।" सम्पूर्ण कहानी इसी मूक प्रेम के बीच घटित होगी है।

इसप्रकार गुजरी जी की सिर्फ तीन कहानियों ही प्रेम के तमाम स्वरूपों का दर्शन कराती है चाहे 'सुखमय जीवन' का आकस्मात् प्रेम हो चाहे 'बुढ़ा का कौटा' का उच्छ्वस अनुभवों से परिपक्व होगा प्रेम हो, चाहे 'उसने कहा था' के प्रेम का मूक समर्पण हो।

डॉ० अभिषेक कुन्दन
असिस्टेंट प्रोफेसर
जी०डी० कॉलेज, बेगूसराय



REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA